श्री महावीर स्वामी पूजा विधान

माण्डला

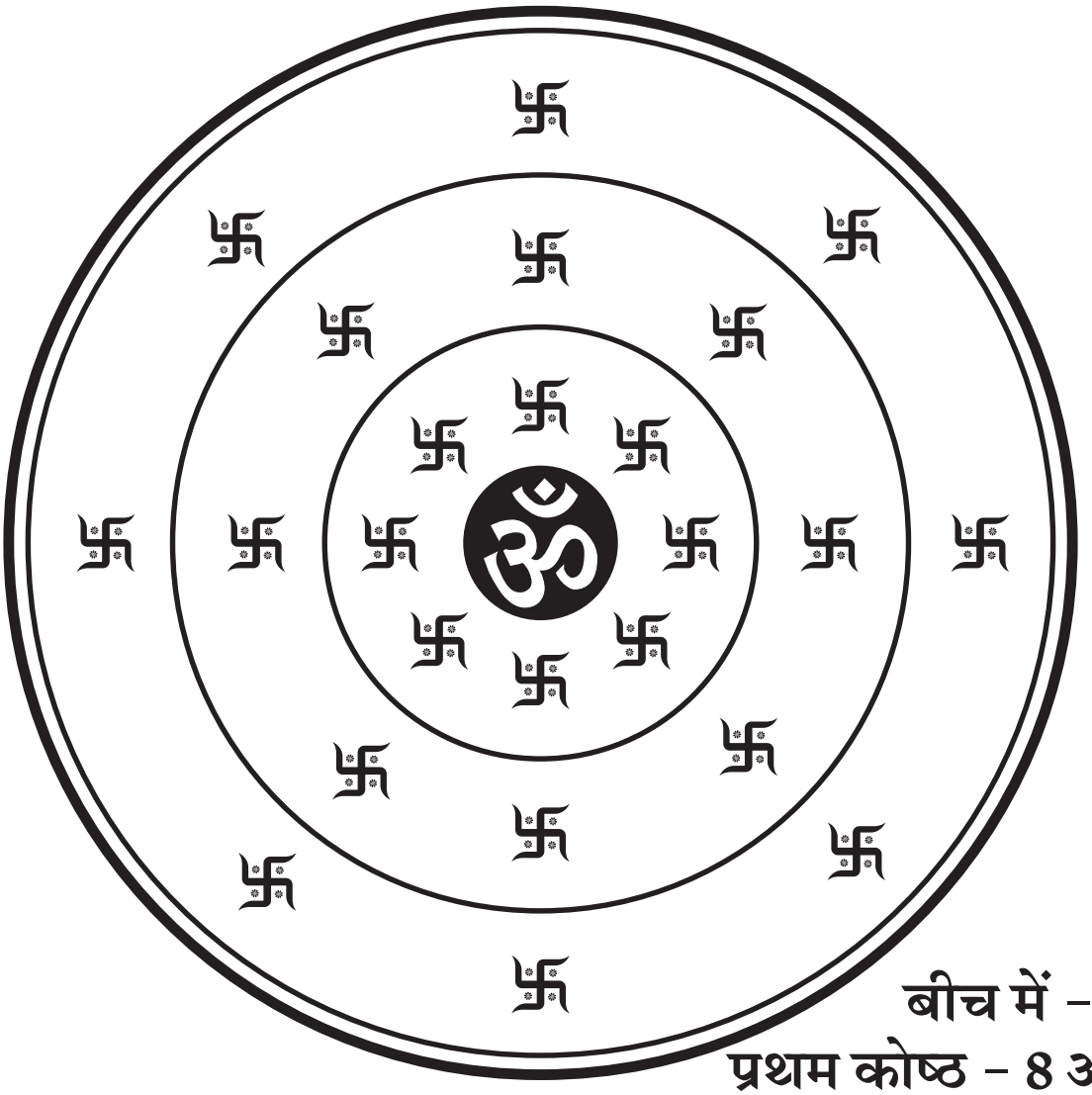

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 8 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति	:	श्री महावीर स्वामी पूजा विधान
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम 2023, प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी ब्र. प्रदीप भैया – मो.: 7568840873
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी – मो.: 9829076085 ब्र. आस्था दीदी – मो.: 9660996425 ब्र. सपना दीदी – मो.: 9829127533
संयोजन	:	ब्र. आरती दीदी – मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर–3 रोहिणी, दिल्ली मो.: 9810570747 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक:

चन्द्रसैन जैन, पी. सी. जैन, आलोक जैन

हार्दिक जैन, विहान जैन

WZ-272, गली नं. 3, साधनगर, पालम कॉलोनी, दिल्ली–110045

विनय पाठ (लघु) (दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो !, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो !, आया तुमरे द्वार।।8।।
मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।। ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।।2।। ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।। ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।। ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

''पूजा प्रतिज्ञा पाठ''

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान !
हे अर्हन्त ! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

''स्वस्ति मंगल पाठ''

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

''परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ''

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं ।।

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान विंशति जिनः, अनन्तानन्त सिद्ध, निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल-छन्दः)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अक्षतं निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

।। शांतये शांतिधारा ।।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घ्यावली

(दोहा)

दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती दैव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।
संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश।
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस-छन्द)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।1।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।2।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।3।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।4।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।।5।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।6।।

दोहा - अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव,विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी-छन्दः)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय जलं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय दीपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय फलं निर्व.स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार।।

(शांतये शांतिधारा)

दोहा – पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा – जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्थ हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर हैं मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा – सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री .....सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर,

नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इष्ट प्रार्थना

तर्ज - भावना दिन रात मेरी.....

भावना भगवान मेरी, यह सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील धर, हर जीव का उद्धार हो।। टेक।।
पाप का परिहार होवे, धर्म का प्रचार हो।
वीर वाणी का सतत्, व्यवहार घर-घर बार हो।।
सप्त व्यसन का जहाँ से, हे प्रभू जी ह्रास हो।
शान्ति वा आनन्द का, हर जीव के उर वास हो।।
देव गुरु वाणी में हर इक, जीव का विश्वास हो।
हर बुराई का जहाँ से, पूर्णतः अब नाश हो।।
खेद अरु भय शोक हे जिन !, जीव के सब दूर हों।
सौख्य शांती से सभी जन, पूर्णतः भरपूर हों।।
संत श्रावक के हृदय से, मद सदा चकचूर हो।
हो 'विशद' धर्मात्मा हर, नूर का भी नूर हो।।

दोहा - भाए जो यह भावना, मन में श्रद्धा धार।
अल्प काल में जीव वह, हो जाए भव पार।।

श्री महावीर स्तवन

दोहा- माँ त्रिशला सिद्धार्थ सुत, महावीर भगवान।
जिनकी अर्चा कर मिले, शिवपद का सोपान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

नगर विशाल रहा कुण्डलपुर, नर सुरेन्द्र आदिक से मान्य।
कामरूप हाथी के मर्दन, करने हेतु सिंह समान।।
सिंह चिन्ह से शोभित हैं जो, ऐसे वीर श्री वर्द्धमान।
सबके द्वारा वन्दनीय हैं, जन्मे महावीर भगवान।।1।।
जिन भगवान वीर का पावन, धर्म पवित्र रहा अभिराम।
अर्थ काम सुख देने वाला, स्वर्ग मोक्ष दाता शिवधाम।।
ऐसे श्री देवाधिदेव जिन, अनुपम वीर नाथ भगवान।
के चरणों में नमन हमारा, क्षण में करें जगत कल्याण।।2।।
धर्म अनादी से विदेह में, चलता आया महति महान।
ऋषभ देवजी इस युग में भी, किए प्रवृत्ती जिसकी आन।।
अजितनाथ से पार्श्वनाथ तक, बाईस तीर्थंकर पाते आप।
उसी धर्म का महावीर प्रभु, किए निरूपण नाशे पाप।।3।।
नित्य सनातन रहा धर्म यह, काल अनादी अपरम्पार।
किसी क्षेत्र या किसी काल में, और किसी भी अन्य प्रकार।।
किसी रूप से बदल सके न, धर्म विशद जो मंगलकार।
जैसा है वैसा ही रहेगा, काल अनादी विस्मयकार।।4।।

दोहा- कुण्डलपुर जन्मे प्रभू, पाए राजगृहि ज्ञान।
पावापुर से शिव गये, पाए पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

श्री महावीर स्वामी पूजा विधान (लघु)

स्थापना

हे वर्धमान ! हे महावीर !, अतिवीर वीर सन्मति स्वामी।
हे शासन नायक ! इस युग के, हे त्रिभुवन पति अन्तर्यामी !
हम शीश झुकाते तव चरणों, आशीष आपका पा जाएँ।
आह्वानन करते निज उर में, हम महिमा प्रभु जी शुभ गाएँ।।

दोहा- वीर वीरता दो हमें, करें कर्म का नाश।
यही भावना है विशद, पाएँ शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

आतम अनुभव का निर्मल जल, हम निज भावों से लाए हैं।
जन्म जरादिक रोग नाश यह, करने तव पद आए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आतम अनुभव का चन्दन, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं।
संसारताप का नाश होय प्रभु, पद अर्चा को आए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षत निज अनुभव के, यह पूजा करने लाए हैं।
पद अक्षय पाने नाथ ! चरण, हम भाव बनाकर आए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शुद्धातम के विविध पुष्प, यह आज चढ़ाने लाए हैं।
हो काम रोग विध्वंश शीघ्र प्रभु, चरण शरण में आए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बनाए निजगुण के, प्रभु शरण आपकी आए हैं।
हो क्षुधारोग उपशांत प्रभो !, सदियों से सतत् सताए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आत्म सुगुण प्रगटित करने, यह दीप जलाकर लाए हैं।
मिथ्यातम छाया जीवन में, हम उसे नशाने आए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म आवरण नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।
है अष्टकर्म का कष्ट हमें, वह कष्ट मिटाने आए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चेतन की विधि भूल रहे, उसको प्रगटाने आए हैं।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, फल सरस चढ़ाने लाए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम में गुण हैं अनन्त, वह भूल के जग भटकाएँ हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, वह गुण पाने को आए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांतीधारा दे रहे, विनय भाव के साथ।
विशद भावना भा रहे, बनें श्री के नाथ।।

(शान्तये शान्तीधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने मुक्तीधाम।
होवे पूरी कामना, करते चरण प्रणाम।।

(दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(छन्द)

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी गाई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया।।3।।

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला दशमी केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - अन्तिम तीर्थंकर हुए, महावीर भगवान।
गाते हैं जयमाल हम, करते शुभ गुणगान।।

(वीर छन्द)

हे वर्तमान शासन नायक ! हे युग दृष्टा ! हे महावीर !
हे जग जीवों के उद्धारक ! पुरुषार्थ साध्य साधक सुधीर।।
महावीर आपकी वाणी का, सर्वत्र गूँजता चमत्कार।
जग जीवों के हे सूत्रधर !, तव चरणों वन्दन बार बार।।1।।
नृप सिद्धारथ के पुत्र रत्न, माता त्रिशला के मुदित भाल।
हे अन्तिम तीर्थंकर पावन, मुक्ती पथ के पंथी विशाल।
हे तीन लोक के अधिनायक ! सर्वज्ञ प्रभो ! हे वीतराग।।
हे परम पिता ! हे परम ईश ! अन्तर में जागे शुभम राग।।2।।
जिन का प्रभाव दर्शन करके, सब कर्म पाप कट जाते हैं।
जो भाव सहित अर्चा करते, मन वांछित फल वे पाते हैं।
है वीतराग मुद्रा जिन की, भव्यों के मन को भाती है।
जो ध्यान करे प्रभु का मानो, वो अपने पास बुलाती है।।3।।

दोहा - जिन पद की पूजा करे, मिलकर सकल समाज।
यही भावना है विशद, सफल होंय सब काज।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिनवर स्वामी ! त्रिभुवननामी कोटि नमामि जग ख्याता।
हेजग उद्धारक ! पाप निवारक शिव पथ दायक शिवदाता।।

(इत्याशीर्वाद)

प्रथम वलय

दोहा – छियालिस गुण दश धर्मयुत, रत्नत्रय तपवान।
विघ्न विनाशी शांति कर, पूज रहे भगवान।।

(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सहस्त्राष्ट लक्षण के धारी, अतिशय रूप सुगन्धीवान।
वज्र वृषभ नाराच संहनन, सम चतुस्त्र संस्थान प्रधान।।
बल अतुल्य प्रिय हित वाणी युत, ना पसेव ना रहे निहार।
श्वेत रुधिर तन का दश अतिशय, जन्म समय के मंगलकार।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शत् योजन में हो सुभिक्षता, गमनागमन ना कवलाहार।
अदया रहित चतुर्दिक दर्शन, हो उपसर्गों का परिहार।।
सब विद्या के ईश्वर छाया, रहित बढ़े ना ही नख केश।
नाही झलकते पलक नेत्र के, दश अतिशय ये कहे विशेष।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानातिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भाषा अर्ध मागधी निर्मल, दिश आकाश मित्रतावान।
खिलें फूल फल सब ऋतुओं के, पृथ्वी होवे काँच समान।।

चरण कमल तल कमल गगन में, गंधोदक की होवे वृष्टि।
मंद सुगन्ध बयार गगन में, जय-जय हो हर्षित सब सृष्टि।।
कंटकरहित भूमि मंगलद्रव्य, धर्मचक्र हो अग्र गमन।
अतिशय देव रचित ये चौदह, करें भव्य प्रभु का अर्चन।।3।।

ॐ ह्रीं देवकृत चतुर्दश अतिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श अनन्त ज्ञान सुखधारी, बल अनन्त पावें भगवान।
अनन्त चतुष्टय के धारी हों, पाने वाले केवलज्ञान।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्म जरा चिंता विस्मय रुज, क्षुधा तृषा निद्रा या खेद।
राग द्वेष भय मरण मोह मद, शोक अरति अरु जानो स्वेद।।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, जगती पति होते भगवान।
भव्य जीव जिनकी अर्चाकर, पावें पावन पुण्य निधान।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोषरहित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तरु अशोक त्रय छत्र शोभते, दिव्य ध्वनि हो मंगलकार।
रत्नमयी सिंहासन दुन्दुभि, भामण्डल सोहे मनहार।।
पुष्पवृष्टि हो देवों द्वारा, चौंसठ चँवर ढुराएँ देव।
प्रातिहार्य यह आठ प्रभू के, समवशरण में होंय सदैव।।6।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप जान।
त्यागाकिंचन ब्रह्मचर्य धर, ऋषिवर पाते शिव सोपान।।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, करते हैं जग का कल्याण।
जिनकी अर्चा करते श्रावक, भाव सहित करते गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं दशधर्म युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित शुभ, रत्नत्रय है मंगलकार।
जिसको धारण करके प्राणी, हो जाते हैं भव से पार।।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, करते हैं जग का कल्याण।
जिनकी अर्चा करते श्रावक, भाव सहित करते गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – प्रातिहार्य अतिशय तथा, अनन्त चतुष्टयवान।
रत्नत्रय तप धर्म युत, पूजें हम भगवान।।

ॐ ह्रीं षटचत्त्वारिंशद मूलगुण दशधर्मरत्नत्रय प्राप्त श्रीमहावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वा.।

द्वितीय वलय

दोहा –विविध गुणों के कोष जिन, शिव सुख के दातार।
जिनपद में पुष्पांजलि, करते बारम्बार।।

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अनशन ऊनोदर कर वृत्ति, परिसंख्यान और रस त्याग।
विविक्त शैय्यासन कायक्लेश तप, बाह्य सुतप छः में अब लाग।।
प्रायश्चित वैय्यावृत्ती स्वाध्याय, विनय और व्युत्सर्ग सुध्यान।
द्वादश तपकर कर्म निर्जरा, करके पाते पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हम आकांक्षी धन दौलत के, मोहित हो द्रव्य कमाते हैं।
है मोक्ष लक्ष्मी शाश्वत् शुभ, हम प्राप्त नहीं कर पाते हैं।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं शाश्वत लक्ष्मी प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पुरुषार्थ करें प्राणी भारी, ना लाभ पूर्णतः मिल पाए।
अर्चा करके जग जीवों का, लाभान्तराय भी नश जाए।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाए।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चिन्ताएँ सतत् सताती हैं, ना शांती मन में आ पाए।
पूजा करने से जिनवर की, चिंता भी पूर्ण विनश जाए।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं चिन्ताविनाशक चिन्तामणि समान फलदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहता अशान्त मन मेरा यह, जिससे आकुलता हो भारी।
जो रागद्वेष तजकर मन से, हो जाए समता का धारी।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं मंगल शांति दायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो धर्मोत्साह प्राप्त मन में, लक्ष्मी होवे वृद्धीकारी।
जिनराज की पूजा अर्चा से, यह जीवन हो मंगलकारी।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं धर्म वृद्धि लक्ष्मीदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञान ध्यान तप लीन रहें, वे निज अज्ञान नशाते हैं।
वाचस्पति सम विद्या को पावें, अतिशय सद्ज्ञान जगाते हैं।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमान विद्या प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पुण्य योग से पुत्र वंश, सुख प्राप्त करें संसारी जीव।
धर्म के फल से उभय लोक सुख, प्राप्त करें शुभ सौख्य अतीत।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं पुत्रवंश सुख प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – जिन अर्चा करके सभी, होते विघ्न विनाश।
मनोकामना पूर्ण हो, होवे पूरी आस।।

ॐ ह्रीं सर्व मनोरथ प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तृतीय वलय

दोहा - विघ्न विनाशी आप हैं, महावीर तीर्थेश।
अर्चा को पुष्पांजलि, करते यहाँ विशेष।।

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

''चौपाई''

मन- वच-तन के पड़े हैं फेरे, अतः कर्म रहते हैं घेरे।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए।।1।।

ॐ ह्रीं संसारदु:ख नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्मोदय ने हमको घेरा, दरिद्रता ने डाला डेरा।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वदरिद्रता नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्मोदय में खोते आए, जलोदरादिक रोग सताए।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए।।3।।

ॐ ह्रीं जलोदरादिक रोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

टी. बी. शुगर आदिक बीमारी, सदा सताए सबको भारी।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए।।4।।

ॐ ह्रीं टी.बी शुगरादि रोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र कर्ण के रोग कहाए, भारी उससे सदा सताएँ।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।5।।

ॐ ह्रीं नेत्र कर्णादिक रोगनाशक श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वात पित्त ज्वर आदिक भाई, रहे लोक में ये दुखदायी।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।6।।

ॐ ह्रीं वात पित्त कफ जलोधर उदरादि सर्वरोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल थल नभचर प्राणी भाई, कृत उपसर्ग रहे दुखदायी।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।7।।

ॐ ह्रीं तिर्यंचकृत उपद्रव नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिता पुत्र भाई जो गाए, राग द्वेष कर सभी सताए।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।8।।

ॐ ह्रीं कुटुम्ब दु:ख क्लेश नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा – जिन अर्चा कर जीव को, ऋद्धि सिद्धि हो प्राप्त।
इस भव के सुख प्राप्तकर, बनें स्वयंभू आप्त।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूलगुणों के धारी अर्हत्, रत्नत्रय तप धर्मोंवान।
विघ्न विनाशक शांति प्रदायक, करने वाले जग कल्याण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, वीर प्रभू पद अपरम्पार।
'विशद' भावना भाते हैं हम, प्राप्त करें प्रभु शिव का द्वार।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अर्हं महावीर जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा – जिनको ध्याते भाव से, जग के बालाबाल।
महावीर भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(सुवीर छन्द)

हे वीर प्रभु ! हम द्वार आपके, आके करें पुकार।
चरण शरण दो हमको स्वामी, करो शीघ्र उद्धार।।
भक्तौं पर दृष्टी डालो प्रभु, रहें सदा श्रद्धान।
विशद भावना भाते हैं हम, पाएँ सम्यक् ज्ञान।।1।।
इतना साहस रहे हृदय में, देवागम ऋषिराज।
सदा रहें इनके श्रद्धानी, रहें मेरे सरताज।।
श्री जिन की वाणी को सुनकर, पालें निज कर्तव्य।
हृदय बसे जिनवाणी नितप्रति, स्याद्वाद मय भव्य।।2।।
सप्त तत्त्व का ज्ञान जगे उर, बीज पदों का ध्यान।
तत्त्व अर्थ को हृदय धारकर, पाएँ भेद विज्ञान।।
शिव पथ के राही गुरु गाए, पालें पंचाचार।
भव्यों को सन्मार्ग प्रदायक, होते जग हितकार।।3।।
अर्ज हमारी इतनी सी है, हे प्रभु ! कृपा निधान।
अर्चा करें आपकी मेरा, घटे पाप अभिमान।।
दिया आपने भक्तों को प्रभु, मुँह माँगा वरदान।
योग्य समझकर भर दो झोली, हे प्रभु ! कृपा निधान।।4।।
जिन शासन जयवन्त रहे प्रभु, जिनवाणी जिन संत।
व्रत का पालन करें भाव से, पाएँ भव का अंत।।

दोहा – वर्धमान सन्मति प्रभो ! वीरातिवीर महावीर।
अर्चा की है भाव से, मैटो भव की पीर।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा – पूजा करते आपकी, हे त्रिभुवन के ईश !
पुष्पांजलि करते विशद, झुका रहे पद शीश।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आरती महावीर प्रभु की तर्ज – इह विध.....

वीर प्रभू की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।
श्री सिद्धार्थ पिता कहलाए, माता त्रिशला देवी पाए।।
मगध देश वैशाली गाया, जन्म नगर कुण्डलपुर पाया।।1।।
षष्टी शुक्ल अषाढ़ कहाए, गर्भ में चयकर स्वर्ग से आए।।2।।
चैत शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभू ने अतिशय पाया।।3।।
मगसिर दशमी तिथि को भाई, परं दिगम्बर दीक्षा पाई।।4।।
दशें शुक्ल वैशाख बखानी, हुए प्रभु जी केवल ज्ञानी।।5।।
कार्तिक कृष्ण अमावस पाए, पावापुर से मोक्ष सिधाए।।6।।
वर्धमान सन्मति कहलाए, वीर और अतिवीर कहाए।।7।।
महावीर प्रभू नाम के धारी, हुए लोक में मंगलकारी।।8।।
स्वर्ण रंग तन का प्रभु पाए, सात हाथ ऊँचे कहलाए।।9।।
वर्ष बहत्तर आयू पाए, विशद लोक में पूज्य कहाए।।10।।
जो भी प्रभु की आरति गाए, वह अपना सौभाग्य जगाए।।11।।
तीन योग से जिन पद ध्याएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।12।।

श्री महावीर विधान (संस्कृत)

माण्डला

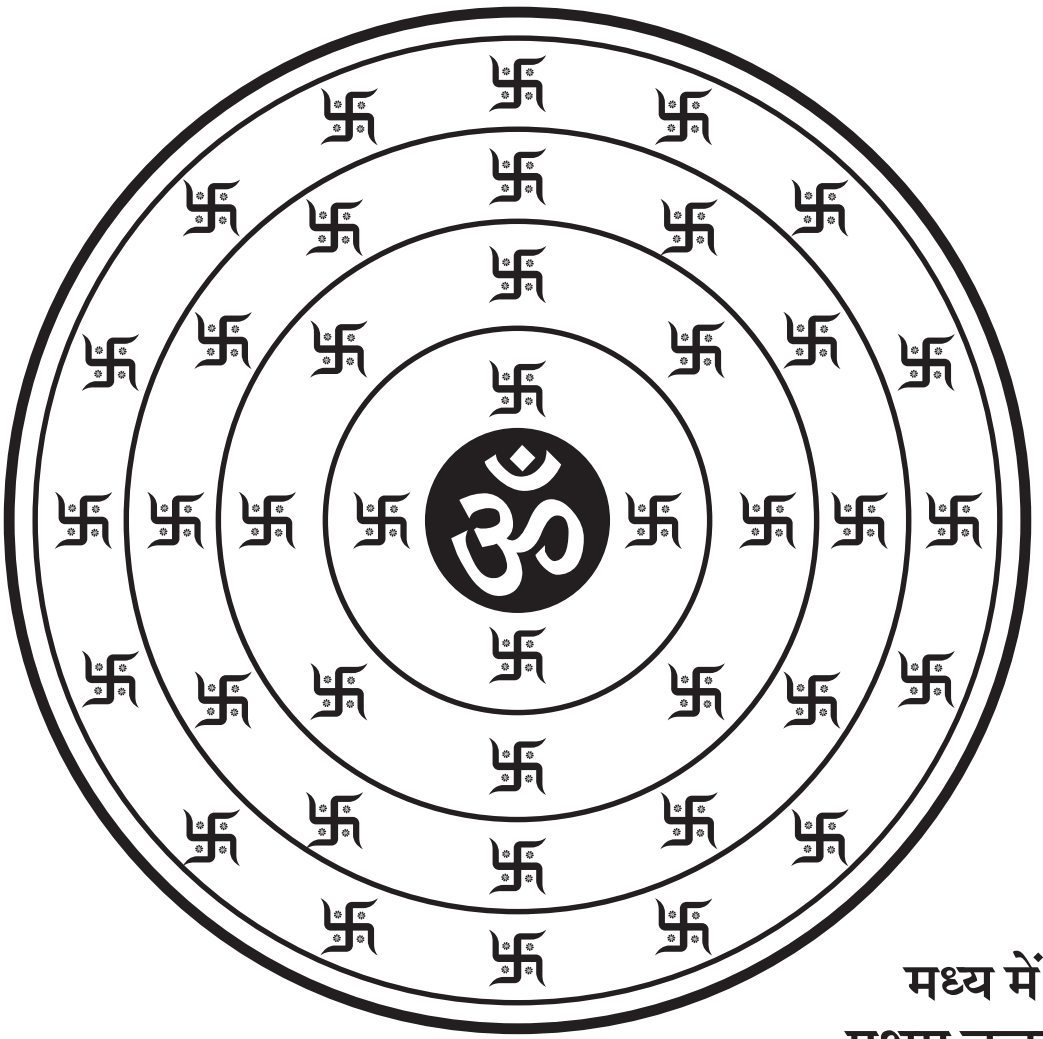

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय – 4
द्वितीय वलय – 8
तृतिय वलय – 12
चतुर्थ वलय – 16
कुल – 40 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

स्तवन (द्रुतविलंवित छन्द)

सकल-शक्र-समाज-सुपूजितं, सकल-संयति-संतति-संस्तुतम्।
विमल-शील-विभूषण-भूषितं, भजत तं प्रथितं त्रिशला-सुतम्।।1।।
कलिल-कानन-भंजन-कुंजरं, शिव-सरोरुह-संचय शंवरम्।
कुगति-पंकजिनी-रजनी-करं, भजत तं प्रथितं त्रिशला-सुतम्।।2।।
कुमति-वादि-दिवान्ध-दिवाकरं, कुटिल-काम-कुरंग-वनेश्वरम्।
सुखद-शान्त-सुधारस-सागरं, भजत तं प्रथितं त्रिशला-सुतम्।।3।।
रुचिर-राज्यसुखं भविनां कृते, द्रुततरं परिहृत्य च येन सा।
भगवता यतिता सुतता धृता, भजत तं प्रथितं त्रिशला-सुतम्।।4।।
अधम-यज्ञभवं पशु-हिंसनं, निज-सुदेशन या विनिवारितम्।
क्षितितलेऽत्र दया सुविसारिता, भजत तं प्रथितं त्रिशला-सुतम्।।5।।
सरल-सत्य पथे सुमनोहरे, विचलिता जनता विनियोजिता।
खल-दलं सकलं सरलीकृतम्, भजत तं प्रथितं त्रिशला-सुतम्।।6।।
अहह! शूद्र-जनानिह भारते, व्यदलयन् खलु जात्यभिमानिनः।
विघटिता कुल-जाति-मदान्धता, भजत तं प्रथितं त्रिशला-सुतम्।।7।।
विकच-पंकज-पत्रविलोचनं, सकल-साधक-वृन्द-विनन्दनम्।
सघन-विघ्न-घनाघन-भजनं, भजत तं प्रथितं त्रिशला-सुतम्।।8।।

(शार्दूलविक्रीडित छन्द)

वर्षे संयमि-सामजांक-कुमितै श्री वैक्रमीये शुभे,
चैते शुक्लदले त्रयोदश-दिने श्री वीरजन्मोत्सवे।
श्रीमत् पाद पयोज-क्रमांबुजयुगं संध्यायता धीमता,
वीरस्तोत्रमिदं वरं विरचितं शांतिस्तथा शाश्वती ।।9।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री वर्धमान तीर्थंकर पूजा

स्थापना (शार्दूलविक्रीडित छन्द)

श्रीमत्कुंडपुराधिनाथविलसत्-सिद्धार्थभूवल्लभ-।
प्रेमार्द्रा प्रियकारिणीप्रियसुतः संप्रार्च्यते सन्मतिः।।
पंचास्योन्नतकेतनः कनकरुग्-मातंगसिद्धायिनी।
माणिक्याभरणाभि रंजितपद प्रोत्फुल्ल पंकेरुहः।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्धमान तीर्थंकर परमजिनदेव! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(उपजाति-छन्द)

गांगेय पात्रावधृतै-रनल्पै, गंगादि जातामल पुण्य तीर्थैः।
सिद्धार्थ राजात्मज-मिंद्रवंद्यं, श्री वर्धमानं जिनमर्चयामि।।1।।

ॐ ह्रीं वर्धमान जिनदेवाय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर काश्मीर मुख्य प्रसिद्ध, सद्गंध साराश्रित गंधपंकैः।
सिद्धार्थ राजात्मज-मिंद्रवंद्यं, श्री वर्धमानं जिनमर्चयामि।।2।।

ॐ ह्रीं वर्धमान जिनदेवाय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखंडितैः शुभ्रतरैर्-विशुद्धैः, शाल्यक्षतै-रीक्षण कोमलांगैः।
सिद्धार्थ राजात्मज-मिंद्रवंद्यं, श्री वर्धमानं जिनमर्चयामि।।3।।

ॐ ह्रीं वर्धमान जिनदेवाय नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

गंध भ्रमद्भृंग निकायकम्र-झंकार रम्यैर्-वर पुष्पजालैः।
सिद्धार्थ राजात्मज-मिंद्रवंद्यं, श्री वर्धमानं जिनमर्चयामि।।4।।

ॐ ह्रीं वर्धमान जिनदेवाय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविधैर्-नव्यघृतोद्भवोद्घैर्-भक्ष्यैर्मनोज्ञैश्-चरुभिस्सुपक्वैः।
सिद्धार्थ राजात्मज-मिंद्रवंद्यं, श्री वर्धमानं जिनमर्चयामि।।5।।

ॐ ह्रीं वर्धमान जिनदेवाय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूरजातैर्विमलैः प्रभौघ, दूरीकृत ध्वान्त गणैः प्रदीपैः।
सिद्धार्थ राजात्मज-मिंद्रवंद्यं, श्री वर्धमानं जिनमर्चयामि।।6।।

ॐ ह्रीं वर्धमान जिनदेवाय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यैस्-सुकालागरु मुख्य धूप, योग प्रमुक्ताऽमल धूप धूम्रैः।
सिद्धार्थ राजात्मज-मिंद्रवंद्यं, श्री वर्धमानं जिनमर्चयामि।।7।।

ॐ ह्रीं वर्धमान जिनदेवाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलैर्-वरैर्दाड़िम नालिकेरैर्-कपित्थ रंभाम्र सुबीज पूरैः।
सिद्धार्थ राजात्मज-मिंद्रवंद्यं, श्री वर्धमानं जिनमर्चयामि।।8।।

ॐ ह्रीं वर्धमान जिनदेवाय नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षतं पुष्पं, चरु दीप धूपं फलं।
'विशद' जिन पादाम्भोजं, अर्घ्यं तु समादरात।।9।।

ॐ ह्रीं वर्धमान जिनदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(उपजाति छन्द)

अर्घ्यै-रनर्घ्यैः फलगंधपुष्पै, शाल्यक्षताद्यन्वित पात्र संस्थैः।
गर्भागमे विशदं इंद्र वंद्यं, श्री वर्धमानं जिन-मर्चयामि।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री वर्धमानजिनदेवाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यै-रनर्घ्यैः फलगंधपुष्पै, शाल्यक्षताद्यन्वित पात्र संस्थैः।
जन्मोत्सवे जिनपं इंद्र वंद्यं, श्री वर्धमानं जिन-मर्चयामि।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमण्डिताय 'श्रीसन्मति' तीर्थंकर परमजिनदेवाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यै-रनर्घ्यैः फलगंधपुष्पै, शाल्यक्षताद्यन्वित पात्र संस्थैः।
संयमोत्सवे अर्हत् इंद्र वंद्यं, श्री वर्धमानं जिन-मर्चयामि।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष कृष्णदशम्यां दीक्षामंगलमंडिताय ''श्री वीर'' तीर्थंकर परमजिनदेवाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यै-रनर्घ्यैः फलगंधपुष्पै, शाल्यक्षताद्यन्वित पात्र संस्थैः।
ज्ञानोत्सवे मुनिपं इंद्र वंद्यं, श्री वर्धमानं जिन-मर्चयामि।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणप्राप्ताय ''श्री अतिवीर'' तीर्थंकर परमजिनदेवाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यै-रनर्घ्यैः फलगंधपुष्पै, शाल्यक्षताद्यन्वित पात्र संस्थैः।
निर्वाण समये शत् इंद्र वंद्यं, श्री वर्धमानं जिन-मर्चयामि।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावास्यां मोक्षमंगलमंडिताय ''श्री महावीर'' तीर्थंकर परमाजिनदेवाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांत्यै सुकांत्यै पयसां मनोज्ञ, धाराभि-राराध्य महींद्रवंद्यं।
सिद्धार्थ राजात्मज-मिंद्रवंद्यं, श्री वर्धमानं जिन-मर्चयामि।।

।। शान्तये शांतिधारा ।।

सुभग वर्धमानकं, विबुध वर्धमानकं।
सुरभि पुष्पकैर्-यजे, भवविनाशकं जिनं।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

नमः श्री महावीराय, सर्व दोषातिगाय वै।
पंच कल्याण युक्ताय, हत कर्माष्टकाय च।।

(श्री-छन्द)

जय वीर सन्मति धीर प्रभु, अतिवीर जिन तीर्थंकरम्।
जय जगत वन्दन दुख निकन्दन, हरण भव भय दारुणम्।।1।।
जय जयति त्रिभुवन पति परमयति, भव्य जन सुख कारणम्।
जय ज्ञान रवि चैतन्य चिन्ता-मणि श्री जगदीश्वरम्।।2।।

महिमामयम् महितोदयम्, वदताम्बरम् वागीश्वरम्।
योगीश्वरार्चित धर्मपति, देवाधिदेव! जयेश्वरम्।।3।।
जय पाप-पुण्य निरोधकम्, ज्ञानेश्वरम् क्षेमंकरम्।
जय महामंगल मूर्ति जय, सन्मति जिनं तीर्थंकरम्।।4।।
जय मुक्ति दाता श्री जिनेश्वर, वीर प्रभु लोकेश्वरम्।
जय देव विघ्न विनाशनम्, जय महावीर महेश्वरम्।।5।।
जय अमल अविकल विमल जय जय, जय परम आनन्दकम्।
जय धर्मधर स्वधर्म रवि जय, शांति जग कल्याणकम्।।6।।
जय जय अलौकिक दर्शज्ञानी, चरितमय अभ्यन्तरम्।
जय परम पावन दुख निकन्दन, शीलधर शिव शंकरं।। 7।।
जय जयति जिन परमेश्वरम्, जय महावीर जिनेश्वरम्।
जय जयति प्रभु मंगलमयम्, मंगलमयम् मंगलमयम्।।8।।

(अनुष्टुप छन्द)

विश्व पूज्यं विदिर्वेदं, वीरं विराग वैभवम्।
संग मुक्तं यजे नित्यं, केशवं सम्भव जिनम्।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व गुणाधिपं सारं, सर्व सौख्य करं सताम्।
जिनगुणावलिं कुर्यात्, विशदं शास्वतिश्रियं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

अर्घ्यावली

(अनुष्टुप छन्द)

सिद्धार्थ त्रिशला पुत्रं, महावीर जिनं परं।
त्रैलोक्य पूज्यं विशदं, बालयति जिनेश्वरं।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अनन्त चतुष्टय

(उपजाति-छन्द)

अतीन्द्रियं स्वात्मगतं यदीयं, स्वभाविकं दर्शनकं ह्यनन्तम्।
जगत्त्रयं येन च दृश्यते सदा, श्री वर्धमानं तमहं नमामि।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनंत संसार विभेदकं यद्-ह्यनन्त तत्त्व प्रतिभासकं वा।
अनन्तविज्ञान-मिदं जिनस्य, सन्मति यस्येह भवेत्कदाचित्।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनन्तमोह प्रगमादनन्त-मात्मोद्भवं संतत निर्विकल्पम्।
अनन्तसौख्यं विगतान्तराय-श्री वीर नाथः स च तत्प्रपेदे।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अबाधता यस्य निजात्मशक्ति, अगाधवीर्यं वरयोगिगम्यम्।
तेनात्र लोके युगपत्समस्तं, जानात्यसौ पश्यति सोप्-यनन्तः।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुष्कर्म विभेदेन्, प्राप्ताऽनन्त चतुष्टयम्।
अनन्त माहात्म्य युक्तं, वीर नाथं नमाम्यहं।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

अथाष्टप्रतिहार्य पूजा

मोक्षमार्गोपदेशीश - जगता - ममृतोपमम्।
वचस्ते हृदि संलग्नं, कुर्यात्किन्नाजरामरम्।।1।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सूर्यकोटिं तिरस्कुर्वन्-नाथ! ते दीप्तिमण्डलम्।
असुमिथ्या-तमोराशिं, स्फोटयत्वन्तरात्मनः।।2।।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उच्चै रत्नमये गोरौ, भासि सिंहासने विभो!
सुराद्रिशिखरे तिष्ठन्, विचित्रे वैनतेयवत्।।3।।

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नभसो देवनिर्मुक्ता, पतन्ती कुसुमावली।
द्योतते ते पुराऽधीश, हंसश्रेणि रिवोज्ज्वला।।4।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यत्र वृक्षोऽप्यशोकोऽभूत्-सदा पल्लव संयुतः।
त्वत्सामीप्यान्न किं तत्र, सदा पल्लवसंयुतः।।5।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ध्वनंतीवेति गंभीरं, दुंदुभिस्-ते नभस्तले।
आगत्याश्रयतैनं भो!, लोकायातं शिवालयम्।।6।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चामरं वीज्यमानं ते, वपुर्जयति हैमभम।
निर्झरैरिव हेमाद्रेः, सानु चन्द्रकर प्रभैः।।7।।

ॐ ह्रीं चँवर प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उच्चैश्छत्रत्रयं देव!, मुक्तावलिभि-रंजितम्।
भातीवेति वदन्मां वा, जिन रत्नत्रयं सितम्।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्यं पूज्यं, अष्टकर्म विभेदकम्।
अष्ट गुण परिप्राप्तं, पूज्ये जिन त्रियोगतेः।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य युत श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतिय वलयः

द्वादश तपः

एक द्वि त्रि चतुरादि वर्षोपवास संयुते।
तपाऽनशन संयुक्ते, अष्ट द्रव्यै समर्चये।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

यो मुनिः कुरुते नित्य-मवमौदर्य तपो महत्।
पंचेद्रियमदातीत-मष्ट-द्रव्यैः समर्चये।।2।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्य तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

करोति व्रतशुद्धयै रसत्यागं तपो महत्।
धर्मध्यान रतं साधु-मष्टद्रव्यैः समर्पये।।3।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तू संख्या तपो रम्यं, करोति यतिनायकः।
कषाय भटताभैर्-मष्ट द्रव्यैः समर्चये।।4।।

ॐ ह्रीं वृत्ति परिसंख्यान तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेक प्रतिमा स्थानं, कृत्यं कुक्कुटकासनम्।
बहुधेत्यासनं साधो, कायक्लेश विधायिनः।।5।।

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्तु पीड़ा विमुक्तायं, तरुमूल - गुहादयः।
विविक्ता भाषिताः शय्या, स्वाध्याय ध्यान वर्धिकाः।।6।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैयाशन तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनो वचन कायैश्च, नभूवो दुस्कृतं विभो!
तव प्रसादतौ मिथ्या, भवन्ति दुस्कृतं मम्।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

रात्युचाशन पीठिं च, निवसन्ति तलासने।
स्याद् विनय तपश्चित्ते, भणन्ति जिन शासने।।8।।

ॐ ह्रीं विनय तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दश विधानगाराणां, दानं मानादरै भक्त्या।
हस्तपादादि संवाहन्, वैय्यावृत्ति भवन्ति च।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

वाचना प्रच्छनाम्नाय, धर्मोपदेशानुप्रेक्षां।
स्वाध्यायेनास्ति सुध्यानं, ध्यान फल निर्वाणकं।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ममत्वं परिवर्ज्यामि-र्निममत्वे व्यवस्थामि।
आलम्बनं ममात्मनः, अवशेषानि-वोस्सरे।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

मुक्तं सर्व विकल्पानि, तत्त्व चिन्तवनेऽशक्तः।
धर्म ध्याने रतो नित्यं, ध्यान तपो जिनागमे।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

द्वादश तपोऽनशनादि, संवर निर्जरा करः।
'विशद' मोक्ष हेतुं स्यात्, पूजितं अष्ट द्रव्यतः।।13।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप धारकाय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

सोलह कारण भावना

असत्य-सहिता हिंसा, मिथ्यात्वं च न दृश्यते।
अष्टांगं यत्र संयुक्तं, दर्शनं तद्विशुद्धये।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन - ज्ञान - चारित्र - तपसां यत्र गौरवम्।
मनो-वाक्-काय-संशुद्ध्या, सा ख्याता विनय-स्थितिः।।2।।

ॐ ह्रीं विनयसंपन्नतायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेक-शील-संपूर्णं, व्रत-पंचक-संयुतम्।
पंचविंशति-क्रिया यत्र, तच्छीलव्रत-मुच्यते।।3।।

ॐ ह्रीं निरतिचारशीलव्रतायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काले पाठः स्तवो ध्यानं, शास्त्रे चिन्ता गुरौ नतिः।
यत्रोपदेशना लोके, शास्त्र-ज्ञानोपयोगिता ।।4।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र-मित्र-कलत्रेभ्यः, संसार-विषयार्थतः।
विरक्तिर्-जायते यत्र, स संवेगो बुधैः स्मृतः।।5।।

ॐ ह्रीं संवेगायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जघन्य-मध्यमोत्कृष्ट-पात्रेभ्यो दीयते भृशम्।
शक्त्या चतुर्विधं दानं, सा ख्याता दान-संस्थितिः।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपो द्वादश-भेदं हि, क्रियते मोक्ष-लिप्सया।
शक्तितो भक्तितो यत्र, भवेत्सा तपसः स्थितिः।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तिस्तपसे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरणोपसर्गा - दिष्ट - वियोगा-दनिष्ट - योगतः।
न भयं यत्र-प्रविशेत्, साधु-समाधिः स तथा।।8।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुष्ठोदर-व्यथा-शूलैर्-वात-पित्त शिरोर्तिभिः।
कास-श्वास-जरा-रोगैः, पीडिता ये मुनीश्वराः।।
तेषां भैषज्य-माहारं, शुश्रूषा पथ्यमादरात्।
यत्रैतानि प्रवर्तन्ते, वैयावृत्त्यं तदुच्यते।।9।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्त्यकरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनसा कर्मणा वाचा, जिन-नामाक्षर द्वयम्।
सदैव स्मर्यते यत्र, सार्हद्भक्तिः प्रकीर्तिता।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ति भावना अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्ग्रन्थ-भुक्तितो भक्तिस्-तस्य द्वारावलोकनम्।
तद्भोज्यालाभतो वस्तु, रसत्यागोपवासता।।
तत्पाद-वन्दना पूजा, प्रणामो विनयो नतिः।
एतानि यत्र जायन्ते, सूरि-भक्तिर्मता च सा।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव - स्मृति - रनेकान्त - लोकालोक - प्रकाशकाः।
प्रोक्ता यत्रार्हता वाणी, वर्ण्यते सा बहुश्रुतिः।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षड्-द्रव्य-पंच-कायत्वं, सप्त-तत्त्वं नवार्थता।
कर्म-प्रकृति-विच्छेदो, यत्र प्रोक्तः स आगमः।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिक्रमस्-तनूत्सर्गः, समता वन्दना स्तुतिः।
स्वाध्यायः पठ्यते यत्र, तदावश्यक-मुच्यते।।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन-स्नानं श्रुताख्यानं, गीत-वाद्यं च नर्तनम्।
यत्र प्रवर्तते पूजा, सा सन्मार्गप्रभावना।।15।।

ॐ ह्रीं सन्मार्गप्रभावनायैं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्र-गुण-युक्तानां, मुनीनां शील-धारिणाम्।
गौरवं क्रियते यत्र, तद्वात्सल्यं च कथ्यते।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (बसंत तिलका छन्द)

सिद्धार्थ राजकुल मण्डन वीर नाथः,
ज्ञातः सुकुण्डलपुर त्रिशला जनन्यां।
सिद्धि प्रियः सकलभव्य हितंकरो यः,
श्री सन्मतिर्वितनुतात् किल सन्मतिं मे।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

वीरं कर्म जये वीरं, सन्मतिं धर्म-देशने।
उपसर्गाग्नि संपाते, महावीरं नमामि च।।1।।

(शार्दूलविक्रीडित-छन्द)

यत्पादाब्ज-रजः पवित्र-शशभृच्छुभ्रच्छिला संचयो,
विख्यातो विपुलाचलः सुरशिरो वन्द्योऽभवत्तीर्थराट्।
स श्रीमान-मरेन्द्र पूजितपदः कैवल्य-सम्पल्लसन्,
वीरो-भव्यजनैक-बन्धुरनिशं पूयाज्जगन्मानसम्।।2।।

लक्ष्मी वीरजिनेश्वरः पदनतानंतामराधीश्वरः,
पद्मासद्म पदाम्बुजः परम् चिल्लीलात्तत्तत्त्व व्रजः।
विद्या नद्युदयाचलोऽमितबलः शान्ताखिलैनोमलो,
दद्यान्नस्त्रिजगन्नतिं गुणमणि-व्रातोज्जवलालंकृतिम्।।3।।
वीरो वीर नराग्रणीर्गुणनिधिर्-वीरा हि वीरं श्रिता,
वीरेणेह भवेत्सुवीर विभवं वीराय नित्यं नमः।
वीराद् वीर गुणा भवन्ति सुधियां वीरस्य वीराश्चरा,
वीरे भक्ति सुकुर्वतो मम गुणान् हे वीर! देहि्यद्भुतान्।।4।।
यस्य ज्ञानमनन्त वस्तु विषयं यः पूज्यते दैवतैर्-
नित्यं यस्य वचो न दुर्नय कृतैः कोलाहलैर्लुप्यते।
राग द्वेष मुखद्विषां च परिषत् क्षिप्ता क्षणाद् येन सा,
स श्री वीर विभुर्विधूत कलुषां बुद्धिं विधत्तां मम।।5।।

(उपजाति छन्द)

सुवीर नाथस्य नमोस्तु तुभ्यं, दुःखार्ति नाशाय नमोस्तु तुभ्यं।
अभीप्सितार्थाय नमोस्तु तुभ्यं, त्रैलोक्य नाथाय नमोस्तु तुभ्यं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप-छन्द)

महावीर स्तवीमि त्वां, भक्त्या सिद्धयै त्रिशुद्धितः।
चतुर्ज्ञान मतिक्रान्त, 'विशद' ज्ञान लब्धये।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री महावीर छियालिसा

दोहा- सिद्ध और अरिहंत का, है सुखकारी नाम।
आचार्योपाध्याय साधु के, करते चरण प्रणाम।।
वर्धमान सन्मति तथा, वीर और अतिवीर।
महावीर की वन्दना, से बदलते तकदीर।।

चौपाई

जय-जय वर्धमान जिन स्वामी, शांति मनोहर छवि है नामी।।1।।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।2।।
पुरुषोत्तम विमान से आए, माँ को सोलह स्वप्न दिखाए।।3।।
राजा सिद्धारथ कहलाए, कुण्डलपुर के भूप कहाए।।4।।
माता त्रिशला के उर आए, नाथ वंश के रवि कहलाए।।5।।
षष्ठी शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभू ने जिस दिन पाया।।6।।
नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।7।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया।।8।।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, पग में चिह्न शेर का पाया।।9।।
वर्द्धमान तब नाम बताया, जयकारे से गगन गुँजाया।।10।।
पलना प्रभु का मात झुलाये, ऋद्धीधारी मुनिवर आए।।11।।
मन में प्रश्न मुनी के आया, जिसका समाधान न पाया।।12।।
देख प्रभू को हल कर लीन्हा, सन्मति नाम प्रभु का दीन्हा।13।।

मित्रों संग क्रीड़ा को आए, सभी वीरता लख हर्षाए॥14॥
देव परीक्षा लेने आया, नाग का उसने रूप बनाया॥15॥
भागे मित्र सभी भय खाये, किन्तू प्रभू नहीं घबराए॥16॥
पैर की ठोकर सिर में मारी, देव तभी चीखा अति भारी॥17॥
उसने चरणों ढ़ोक लगाया, वीर नाम प्रभु का बतलाया॥18॥
युवा अवस्था प्रभु जी पाए, करके सैर नगर में आए॥19॥
हाथी तब उत्पात मचाए, मद उसका प्रभु पूर्ण नशाए॥20॥
प्रभु अतिवीर नाम को पाए, सभी प्रशंसा कर हर्षाए॥21॥
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, तीस वर्ष में दीक्षा पाए॥22॥
जाति स्मरण प्रभु को आया, तब मन में वैराग्य समाया॥23॥
माघ कृष्ण दशमी दिन पाया, नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन गाया॥24॥
तृतीया भक्त प्रभु जी पाए, दीक्षा धर एकाकी आए॥25॥
स्वर्ण रंग प्रभु का शुभ पाया, सप्त हाथ अवगाहन पाया॥26॥
प्रभू नाथ वन में फिर आए, साल तरू तल ध्यान लगाए॥27॥
कामदेव रति वन में आए, जग को जीता ऐसा गाए॥28॥
रति ने प्रभु का दर्शन पाया, कामदेव से वचन सुनाया॥29॥
इन्हें जीत पाए क्या स्वामी, नग्न खड़े थे शिवपथ गामी॥30॥
प्रभु को ध्यान से खूब डिगाया, किन्तू उन्हें डिगा न पाया॥31॥

कामदेव पद शीश झुकाया, महावीर तव नाम बताया।।32।।
दशें शुक्ल वैसाख बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।।33।।
ऋजुकूला का तीर बताया, शाल वृक्ष वन खण्ड कहाया।।34।।
समवशरण इक योजन जानो, योग निवृत्ती अनुपम मानो।।35।।
कार्तिक कृष्ण अमावस पाए, महावीर जिन मोक्ष सिधाए।।36।।
प्रातःकाल रहा शुभकारी, ग्यारह गणधर थे मनहारी।।37।।
गौतम गणधर प्रथम कहाए, नाम इन्द्रभूती शुभ पाए।।38।।
गणधरजी ने ध्यान लगाया, सायं केवलज्ञान जगाया।।39।।
प्रभु शासन नायक कहलाए, श्रेष्ठ सिद्धान्त लोक में छाए।।40।।
प्रतिमाएँ हैं अतिशयकारी, वीतरागमय मंगलकारी।।41।।
चाँदनपुर महिमा दिखलाए, टीले में गौ दूध झराए।।42।।
ग्वाले के मन अचरज आया, उसने टीले को खुदवाया।।43।।
वीर प्रभु के दर्शन पाए, लोग सभी मन में हर्षाए।।44।।
पावागिरी ऊन कहलाए, वहाँ भी कई अतिशय दिखलाए।।45।।
चरण कमल में हम सिरनाते, 'विशद' भाव से शीश झुकाते।।46।।

दोहा- छियालिसा छियालिस दिन, दिन में छियालिस बार।
पढ़ने से सुख-शांति हो, मिले मोक्ष का द्वार।।